छत्तीसगढ़ की विशिष्ट लोकनाट्य परंपरा : रतनपुरिहा गम्मत

मिलिन्द अमृतफले

"धरती ही नहीं जिन्दगी और प्राण भी हूँ मैं,

काल की कौतुकमयी लीला का प्रांगण भी हूँ मैं।

धान ही नहीं, उपजी है मेरी कोख से संस्कृतियाँ,

मुझे निहारो, कोश में है बंद मेरे युगों की स्मृतियाँ।

बांधा है आँचल में मैंने बीते हर पल को,

आओ तुम्हें दिखाऊँ अपने ऐश्वर्य विमल को।"

छत्तीसगढ़ सिर्फ जंगल, पहाड़ और नदियों का ही जोड़ नहीं। सिर्फ खेत-खलिहानों और जमीनों का ही निचोड़ नहीं। छत्तीसगढ़ केवल धरती और पेड़ों का लेखा-जोखा ही नहीं, वरन् यह कला, संस्कृति, साहित्य परंपराओं के साथ-साथ स्वप्नों और संघर्षों की जीती-जागती तस्वीर है।

'धान का कटोरा' विशेषण से विख्यात इस महकते-गमकते छत्तीसगढ़ की शस्य-श्यामला भूमि में ऐसा बहुत कुछ है, जिसकी रोचकता, मोहकता, माधुर्यता एवं कला, साहित्य-संस्कृति पर सौ बार फिदा है यहाँ का प्रत्येक बाशिंदा। छत्तीसगढ़ की अपनी लोक परंपराएँ, लोक-संस्कृति, लोक साहित्य, भाषा, बोली और आवाज है। छत्तीसगढ़ी संस्कृति, कला, साहित्य केवल विधागत अलंकरण ही नहीं, अपितु इस अंचल की धड़कन है, जो यहाँ के जीवन के प्रत्येक स्पंदन में सुनायी देती है।

छत्तीसगढ़ का परंपरागत लोकनाट्य 'गम्मत' छत्तीसगढ़ी संस्कृति की आबो-हवा का महकता हुआ झोंका है। यह छत्तीसगढ़ी लोक-संस्कृति का आध्यात्मिक-सांस्कृतिक संजीवनी है, लोक-जीवन की विषद् और सशक्त अभिव्यक्ति है। एक तरह से संपूर्ण छत्तीसगढ़ी लोक-संस्कृति की झाँकी का प्रतिबिंब है–'गम्मत'। 'गम्मत' छत्तीसगढ़ के लोक-गीतों, लोक-नृत्यों और लोक-प्रमाताओं (अभिनेताओं) के अभिनय की ऐसी मिली-जुली अभिव्यक्ति है, जिसे अलग-अलग करके नहीं देखा जा सकता। यही कारण है कि 'गम्मत' लोकनाट्य का प्रादुर्भाव मानवीय सभ्यता और संस्कृति के उद्‌भव के समानांतर माना जाता है।

‘गम्मत’ में आध्यात्मिक, धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, सांगीतिक एवं मनोरंजक तत्वों की भरमार रही है। गम्मत में प्रयुक्त ब्रानंद के भजन पद जहाँ इसकी आध्यात्मिक-धार्मिक पृष्ठभूमि को उजागर करते दिखायी देते हैं, तो वहीं कबीर के निरगुनियाँ भजनों और दोहों की सौंधी-सौंधी जमीनी सुगंध 'गम्मत' की सामाजिक पृष्ठभूमि की विद्रूपता, विसंगतियाँ, पाखण्डता का भण्डाफोड़ कर चंदन के शीतल लेप का कार्य करती है।

छत्तीसगढ़ के पारंपरिक लोकगीतों ददरिया, सुआ, करमा, लावनी तर्ज के गीतों की छटा तथा पारंपरिक लोक-नृत्यों के प्रभाव 'गम्मत' लोकनाट्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का बखान करते नजर आते हैं। 'रतनपुरिहा गम्मत' में प्रचलित कृष्ण-लीला पदों में तो शास्त्रीय रागों की झलक भी दिखायी देती है। 'गम्मत' के इस अलौकिक सांगीतिक तत्व ने इसकी अक्षुण्णता और लोकप्रियता को बनाये रखने में निश्चित ही सबसे अहम् भूमिका का निर्वहन किया है, इसमें कोई संदेह नहीं। छत्तीसगढ़ के प्रबुद्ध वर्ग से लेकर आम-साधारण चरवाहा तक इस तथ्य को निष्कपटता और निश्छलता के साथ उद्घाटित करता है। यही गुण 'गम्मत की मौलिकता, पारंपरिकता तथा अलौकिकता का प्रमाण है।

"छत्तीसगढ़ में लोक नाट्य परंपरा का प्रवाह तो प्राचीनकाल से ही रहा है, किंतु प्रमाणिक रूप से संस्कृत नाट्य परंपरा का प्रचलन दसवीं शताब्दी के आस-पास का प्रमाणित होता है। इस काल में हैहयवंशियों के समय में संस्कृत नाटककार कवि 'ईशान' हो चुके है। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि संस्कृत नाटक राजमहलों के प्रांगण, देवालयों में खेले जाते थे और आम जनता के मध्य लोकनाट्य परंपरा का प्रवाह था, जिससे वे अपना मनोरंजन करते थे।"

छत्तीसगढ़ अंचल में समय-समय पर आदिमकाल से वर्तमान तक जैसा सामाजिक परिवेश और सांस्कृतिक वातावरण रहा उसी आधार पर समय-समय पर 'गम्मत' लोकनाट्य की परंपराएँ गढ़ती चली गयी। इन परंपराओं पर आदिम वृत्ति से लेकर भिन्न-भिन्न कालखण्डों का सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। प्राचीन से अर्वाचीन तक समस्त युगीन प्रवाहों के फलस्वरूप गम्मत में प्राचीन की 'कसक और अर्वाचीन की 'धमक' जुड़ती गयी और गम्मत का प्रवाह वर्तमान तक आ पहुँचा है। यह और बात है कि वर्तमान 'डेल्टा' पर आकर गम्मत परंपरा का प्रवाह मंद और उसकी धार कुंद हो गयी है, जो युगीन सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभावों का परिणाम है। फिर भी गम्मत परंपराओं के पल्लवन, पोषण, उन्नयन में सामाजिक-सांस्कृतिक अवलंबनों के आधार और पोषक तत्वों को परित्याज्य नहीं किया जा सकता, वरन् इन्हीं अवलंबनों का आधार लेकर लोकनाट्य 'गम्मत' की परंपराएँ पुष्ट और प्रोन्नत होती रही है।

छत्तीसगढ़ के लोकनाट्यों में गम्मत, रहस, नाचा, चंदैनी, सोनहा-बिहान, कारी, भतरानाट आदि की अपनी-अपनी पृथक और स्वतंत्र परंपरा तथा पहचान है। परंपरागत या सामान्य गम्मत में गीत, संगीत, नृत्य, प्रहसन, अभिनय का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है। इसमें प्रमुख तत्व है–अभिनय। लोक-कलाकार अपने अद्भुत अभिनय कौशल से लोक-जीवन के अतीत, वर्तमान और भविष्य को मंचित करते हैं। 'गम्मत' में प्रस्तुत हास्य-प्रहसन ‘तमाशा' या 'नकल' कहलाता है। कहने को तो यह नकल होता है, किंतु इस 'नकल' में ही लोक-जीवन का असल छिपा होता है। ये 'नकल' लोक में, समाज में घटित घटनाओं के तो नकल होते हैं, किंतु असलियत में सामाजिक कुरीतियों पर व्यंग्यात्मक तीक्ष्ण प्रहार करते हैं और लोक-चेतना का स्वर फूंकते हैं। लोक-कला की कोई भी विधा हो चाहे वह लोकगीत हो, लोक नृत्य हो, लोक-कथा, लोक-गाथा हो या लोकनाट्य हो, ये केवल मनोरंजन या श्रम परिहार के साधन मात्र नहीं है, वरन् लोक जागरण के प्रेरक तत्व हैं।

गम्मत की विशिष्ट परंपरा प्राचीन छत्तीसगढ़ की कलचुरी वंशीय राजधानी 'रतनपुर' (वर्तमान बिलासपुर जिले में) में उद्भूत हुई। आगे इस विशिष्ट परंपरा को 'रतनपुरिहा गम्मत' या 'भादो गम्मत' के नाम से अभिहित किया जाने लगा। ऐतिहासिक नगरी रतनपुर पूर्वी छत्तीसगढ़ के जिला मुख्यालय बिलासपुर से उत्तर-पूर्व दिशा में 25 किलोमीटर दूर बिलासपुर-कोरबा मुख्य मार्ग पर स्थित है। आदिशक्ति श्री महामाया देवी की पवित्र, पौराणिक नगरी रतनपुर का इतिहास अत्यंत प्राचीन है। पौराणिक ग्रंथों जैसे–महाभारत, जैमिनी पुराण आदि से लेकर उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वाद्ध तक के इतिहास में इसे छत्तीसगढ़ की राजधानी होने का गौरव प्राप्त था। त्रिपुरी के कलचुरियों ने रतनपुर को ही ग्यारहवीं शताब्दी में अपनी राजधानी बना दीर्घकाल तक छत्तीसगढ़ पर शासन किया। "रतनपुर को चतुर्युगी नगरी भी कहा जाता है अर्थात् रतनपुर का अस्तित्व चारों युगों में विद्यमान रहा है। "सतयुग में इसका नाम मणिपुर, त्रेतायुग में माणिकपुर, द्वापर में हीरापुर और कलियुग में रतनपुर (रत्नपुर) के नाम से प्रसिद्ध है।"2

'रतनपुरिहा गम्मत' इस नामकरण से ही आभास होता है कि यह रतनपुर का गम्मत विशेष है। रतनपुरिहा गम्मत छत्तीसगढ़ के परंपरागत गम्मत से भिन्न एक विशिष्ट प्रकार और लोकनाट्य परंपरा है। रतनपुरिहा गम्मत के पूर्व रतनपुर तथा शेष संपूर्ण छत्तीसगढ़ में पारंपरिक सामान्य गम्मत का ही प्रचलन था साथ ही रतनपुर में आनुष्ठानिक विधि-विधान से युक्त 'रहस' जैसे लोकनाट्य का भी प्रचलन था। "कृष्ण भक्ति से सराबोर 'रहस' की परपंरा का इतिहास कोई 300-400 वर्ष पुराना है।"3

छत्तीसगढ़ में 'रासलीला' के आगमनपूर्व परंपरागत 'गम्मत' और 'नाचा' का ही प्रचलन था। रतनपुर में भी ये ही नाट्य परंपराएँ प्रचलित थी। मुगल संस्कृति के प्रभाववश 'गम्मत' से अध्यात्म और धार्मिक तत्व समाप्त हो मनोरंजन का पुट प्रभावी हो गया। कालांतर में इसमें अभद्रता, फूहड़ता और भौंडेपन का समावेश होता चला गया। 'रासलीला' की तर्ज पर छत्तीसगढ़ी कलाकारों ने रासलीला को आँचलिक रंग दे अपनी प्रतिभा के आधार पर ब्रज की 'रासलीला' से प्रेरित एक नयी लोककला विकसित की जिसका नाम 'रहस' रखा गया। 'रहस' एक आनुष्ठानिक लोकनाट्य परंपरा थी, जिसका मंचन जीवित मंच पर किया जाता था। यह लगभग 10 दिनों तक मंचित होने वाला जीवंत लोकनाट्य था। 'रहस' का प्रचलन मुगल और मराठा काल के बीच कही से प्रारंभ हुआ। "एक समय रतनपुर और उसके आस-पास के इलाकों में 'रहस' का प्रचलन अत्यंत जोर-शोर से रहा, किंतु "छत्तीसगढ़ में मराठों के शासनकाल से 'गम्मत' और 'नाचा' लोकनाट्यों का प्रचलन और लोकप्रियता उफान पर थी, जिन पर मराठी लोकनाट्य 'तमाशा' का प्रभाव था।"4

छत्तीसगढ़ में मराठा काल का अंतिम चरण आते-आते 'गम्मत' और 'नाचा' लोकनाट्यों में विकृतियाँ, फूहड़ता, भौंडापन और एक सीमा तक अश्लीलता व्याप्त हो चुकी थी। साथ ही 'रहस' जैसा अनुष्ठानिक विधि-विधान से युक्त और जीवंत मंच की मांग करने वाले भारी-भरकम लोकनाट्य का मंचन और प्रचलन अव्यावहारिक होता जा रहा था। मराठाकालीन छत्तीसगढ़ में 'तमाशा' की तर्ज पर 'गम्मत' का प्रचलन था और तब उसमें भी 'तमाशा' के विकारों का प्रभाव आ गया था। " इन समस्त बातों पर रतनपुर दरबार के तत्कालीन् महाकवि, साहित्य सृजनहार, प्रकाण्ड ज्योतिषाचार्य 'बाबू रेवाराम जी' ने संज्ञान लिया। 'रहस' और

'गम्मत' को विशिष्ट परंपरा के रूप में प्रोन्नत और प्रतिष्ठित करने का संपूर्ण श्रेय महाकवि बाबू रेवाराम जी को जाता है। 'रहस' और 'गम्मत' के गिरते स्तर पर संज्ञान ले बाबू रेवाराम जी ने गम्मत की एक आदर्श और विशिष्ट परंपरा का सूत्रपात किया, जिसे 'रतनपुरिहा गम्मत के नाम से विशिष्ट प्रसिद्धि प्राप्त हुई।"5

बाबू रेवाराम जी का यह अवदान गम्मत की विशिष्ट परंपरा के परिप्रेक्ष्य में अतुलनीय एवं अविस्मरणीय है। बाबू रेवाराम जी के काल तक अर्थात् मराठा शासनकाल के अंतिम चरण में 'रहस' तथा 'गम्मत-नाचा' में अनेक विकार और विकृतियाँ आ चुकी थी। अतः बाबू रेवाराम जी ने मध्यकालीन भक्तकवियों के कृष्ण लीला के पदों का संग्रह कर तथा स्वरचित पदों को मिलाकर एक पद संग्रह की रचना की, जो श्रीमद् भागवत् पुराण के दशम स्कंद पर आधारित तथा कृष्ण भक्ति और कृष्ण लीलाओं से ओत-प्रोत था। इस संग्रह में कृष्ण जन्म से लेकर कंस वध के प्रसंग तक अनेकों पद संग्रहित हैं। यह पद संग्रह रतनपुर में 'गुटका' के नाम से अत्यंत लोकप्रिय हुआ। 'गुटका' के पद भक्ति प्रधान होने के साथ-साथ शास्त्रीय संगीत की पृष्ठभूमि से प्रेरित थे तथा 'रहस' के नृत्य भी इन पदों के अनुकूल शास्त्रीय नृत्य शैली के आधार पर संयोजित किये गए थे। बाबू रेवाराम जी ने पूर्व प्रचलित 'रहस' तथा 'गम्मत' का परिष्कार किया। बाबू रेवाराम जी ने 'रहस' की घटती लोकप्रियता एवं 'गम्मत' के फूहड़ और अभद्र प्रदर्शनों से व्यथित हो 'गुटका' के पदों के साथ सुंदर प्रभावी नृत्य जो शास्त्रीय नृत्य शैली से प्रभावित थे संयोजित किये तथा उनके साथ आदर्श 'गम्मत' प्रहसनों का समावेश कर एक नयी लोकनाट्य विधा जनता के समक्ष प्रस्तुत की, जिसे उन्होंने 'रतनपुरिहा गम्मत' नाम से संबोधित किया। चूँकि यह परंपरा केवल रतनपुर में ही विकसित हुई तथा इसके गीत, नृत्यों में शास्त्रीयता का पुट था, उसी प्रकार गीत तथा नृत्यों के साथ तबला संगत भी शास्त्रीय वादन से प्रभावित थी। अतः इन सबका अनुसरण सहज ही संभव नहीं था। गीत-वाद्य-नृत्य पक्ष में एक सीमा तक निष्णात् होना अनिवार्यता थी। अतः यह लोकनाट्य विधा स्वतः ही विशिष्ट परंपरा में प्रोन्नत हो जाती है। छत्तीसगढ़ में अन्यत्र इस परंपरा के दर्शन नहीं होते।

बाबू रेवाराम जी ने परंपरागत 'गम्मत' के लोकरंजन तत्व तथा लोकशक्ति को निरखा-परखा और इसे परिमार्जित-परिष्कृत करने हेतु 'रासलीला' या 'रहस' को उचित माध्यम माना जिसमें 'रहस' का प्रभाव प्रमुख और 'गम्मत' की गमक एवं 'तमाशा' का तत्व गौण प्रमाणित हुआ। 'रतनपुरिहा गम्मत' में 'रहस' या 'रासलीला' के नृत्य तथा कृष्णलीलाओं से संबंधित पदों का गायन प्रमुखता से किया जाता है। अतः लोक तथा शिष्ट परंपरा का सम्मिलित प्रभाव इस विधा को विशिष्ट बनाते हैं। इस दृष्टि से 'रतनपुरिहा गम्मत' का विशिष्ट महत्व है।

'रतनपुरिहा गम्मत' गम्मत की लोकप्रियता को बनाये रखने तथा रासकला से युक्त लोकरंजन को लोकमंगल स्वरूप देने तथा श्रृंगार के बाह्यरूप को उदात्तता पर प्रतिष्ठित करने की दृष्टि से बाबू रेवाराम जी द्वारा लिखित-संकलित श्रीकृष्ण लीला के गुटके पर आधारित आध्यात्म को प्रतिष्ठित करने का महान् आयोजन है।"6

'रतनपुरिहा गम्मत' का प्रदर्शन अत्यंत आकर्षक और मनमोहक है। गीत, संगीत, नर्तन, वादन और अभिनय की समेकित धारा जब एक साथ प्रवाहित होती है तो दर्शक अपने स्थान पर बंधे रह जाते हैं। दर्शक अपनी सुध-बुध खो, स्वयं को भूलकर अपने आप को मंच पर पाते हैं। उन्हें ऐसी अनुभूति होती है, जैसे वे स्वयं श्रीकृष्ण के साथ 'महारस' में सम्मिलित हो गये हैं।

बाबू रेवाराम जी के 'गुटका' में कृष्ण जन्म से संबंधित सोहर पद, पालना पद, बियारी पद, गारी पद, बधावा पद एवं कृष्ण जी की अन्य लीलाओं से संबंधित पद हैं।

'रतनपुरिहा गम्मत' मूलतः नृत्य एवं गीत प्रधान प्रस्तुति है, जो 'रासलीला' और 'रहस' नाट्य से प्रेरित है। इसमें कई पौराणिक पात्र होते हैं जैसे-कृष्ण, राधा, बलराम, कंस, पूतना, देवकी, वासुदेव इत्यादि। 'रतनपुरिहा गम्मत' में कृष्ण लीलाओं के बीच-बीच में सामान्य गम्मत के प्रहसनों के प्रस्तुतीकरण की परंपरा है। ये प्रहसन समाज की कुरीतियों, विसंगतियों पर कटाक्ष करते हुए हास्य व्यंग्य शैली में प्रस्तुत किए जाते हैं, जिसमें भांति-भांति के पात्रों के स्वांग भी निकले जाते हैं। इसमें देवी-देवताओं की झाँकियाँ भी निकाली जाती है।

रतनपुरिहा गम्मत के अंगहार–रतनपुरिहा गम्मत के विविध आभूषण-अंगहार है। इनके उचित संयोजन से रतनपुरिहा गम्मत का स्वरूप संपूर्ण प्रभाव के साथ खिल उठता है। 'रतनपुरिहा गम्मत अपने आयोजनों, स्वरूप, गीत, संगीत, नृत्य पक्ष में परंपरागत (सामान्य) गम्मत से सर्वथा भिन्न एवं अनूठी शैली है और यही उसकी विशिष्टता है। अतः रतनपुरिहा गम्मत के मनमोहक अस्तित्व के निर्माण में उसके विविध घटकों-अवयवों (अंगहारों) की महती भूमिका है, जिनके संयोग से यह शैली भव्य और दिव्य रूप में निखर कर लोगों को आकर्षित तथा प्रभावित करने में सफल रही। रतनपुरिहा गम्मत के विभिन्न महत्वपूर्ण अवयव-घटक (आभूषण-अंगहार) इस प्रकार हैं–

अवसर–रतनपुरिहा गम्मत अपने उद्‌भव काल से ही अत्यंत विशिष्ट विधा रही। इसका आयोजन विशिष्ट लोगों के लिए विशिष्ट स्थान पर किया जाता था, साथ ही विशिष्ट अवसर को ध्यान में रखा जाता था। कहीं भी और कभी भी इसका आयोजन नहीं होता था। उद्‌भव काल में शुभ घड़ी, शुभ ग्रहों के योग तथा शुभ काल की गणना कर 10 दिनों तक 'रहस' के समान इसका आयोजन किया जाता था। कालांतर में 'रतनपुरिहा गम्मत का आयोजन दो शुभ अवसरों पर किया जाने लगा। पहला अवसर भादों शुक्ल चतुर्थी अर्थात् गणेश चतुर्थी से भादो शुक्ल पूर्णिमा तक 10 दिनों तक आयोजन होता था। दूसरा अवसर शरद पूर्णिमा से आगे 5 दिनों तक चलता था। “चूँकि 'रतनपुरिहा गम्मत' मुख्य रूप से भादों महीने में गणेश चतुर्थी से भाद्रपद पूर्णिमा तक 10 दिनों तक आयोजित किया जाता था इसलिए स्थानीय लोग इसे 'भादो गम्मत' के नाम से भी संबोधित करने लगे।"7

आयोजन अवधि–प्रारंभ से ही रतनपुरिहा गम्मत रात्रि 9-10 बजे से प्रातः 6 बजे तक लगभग 9-10 घण्टों तक आयोजित होता रहा। इसका कारण यह प्रतीत होता है कि रात्रि भोजनोपरांत फुर्सत के क्षणों में लोग निश्चिंत और स्थिर-चित्त अवस्था में होते हैं। मनोरंजन एवं तत्वदर्शन समझने-समझाने हेतु यह एक

अनुकूल व आदर्श, शारीरिक व मानसिक अवस्था होती है। इस समय आयोजित कार्यक्रम में दर्शक अत्यधिक रुचि लेकर पूर्ण मनोयोग से गम्मत का संपूर्ण आनंद उठा सकते हैं। उनका चित्त रसपान करने की आदर्श मनःस्थिति में होता है।

मण्डली (दल)–नाट्य विधा सामूहिक प्रदर्शन की विधा है। सामूहिक अभिनयात्मक प्रस्तुति इसका विशिष्ट गुण है। किसी नाट्य में जब पात्र एवं समस्त साजिंदे एकत्रित हो सामूहिक रूप से प्रदर्शन करते हैं तब वे एक दल, समूह, टोली या मण्डली का स्वरूप धारण करते हैं। प्रारंभ में रहस-मण्डली द्वारा रतनपुरिहा गम्मतों के आयोजन किये जाते थे। कालांतर में रतनपुर के ब्राह्मण वर्ग के कलाकारों ने अपनी निजी प्रतिभा और कौशल से 'रहस' आधारित गम्मत को रतनपुरिहा रंग देकर एक अलग और विशिष्ट दल या मण्डली तैयार की। 'रतनपुरिहा गम्मत' में सभी कलाकार स्थानीय (रतनपुर) ही होते थे। मण्डली में कलाकारों की संख्या निश्चित नहीं होती थी फिर भी सूत्रधार (गुटका गायक) के अलावा वादक, नर्तक, सहायक गायक, अभिनेता, झाँकी निकालने वाले, स्वाँग धारण करने वाले जोक्कड़ आदि को मिलाकर कुल 15 से 20 कलाकार अवश्य होते थे।

गुटका–'गुटका' कृष्ण लीलाओं से संबंधित पदों का संकलन ग्रंथ रतनपुरिहा गम्मत का प्रमुख अंगहार या आभूषण है। इसमें निहित पदों के गायन के आधार पर ही समस्त ‘रतनपुरिहा गम्मत 9-10 घण्टों तक लगातार प्रस्तुत किया जाता है। इस गुटके की रचना बाबू रेवाराम जी द्वारा की गयी, जिसमें श्रीमद् भागवत पुराण के दशम् स्कंद में वर्णित श्री कृष्ण की लीलाओं से संबंधित भक्तिकालीन और रीतिकालीन भक्त कवियों के पद संकलित हैं तथा रेवाराम जी ने भी पदों को रचा है। प्रमुख रीतिकालीन भक्त कवियों में सूरदास, तुलसीदास, मीरा बाई, सुंदरदास, तानसेन, चन्द्रसखी, चरनदास, माधोदास, अमरदास, शिवभजन, विद्यापति, मानदास, जयदेव, लालदास, लछिमन दास, परमानंद इत्यादि कवियों के नाम उल्लेखनीय हैं।

बाबू रेवाराम जी ने अपने 'गुटका' को कृष्ण की विभिन्न लीलाओं के आधार पर 21 खण्डों में बांटकर विभिन्न लीलाओं के आधार पर इनको नाम देकर कथाओं को पद्य रूप में ढालकर गुटके का कथानक रचा है। ये लीलाखण्ड इस प्रकार है–1) जन्म लीला, 2) पालना लीला, 3) श्रीधर लीला, 4) गर्ग लीला, 5) विप्र लीला, 6) मृत्तिका लीला, 7) दधिचोरी लीला, 8) बच्छ चरावन लीला, 9) बच्छ हरण लीला, 10) गेंद लीला-नाग लीला, 11) जल-पनघट लीला, 12) गगरी लीला, 13) जादू लीला, 14) वस्त्र हरण लीला, 15) वंशी लीला, 16) दधि दान लीला, 17) ओरहन लीला, 18) मान लीला, 19) रास लीला, 20) अंतर्ध्यान लीला,

21) विरह लीला।

"बाबू रेवाराम के 'गुटका' में उपरोक्त मूल लीलाओं के अतिरिक्त अन्य लीला एवं प्रसंगों में आरती, वंदना, सोहर, बधावा, ब्यारी, गारी, पूतना वध, कागासुर वध, तृणावर्त वध, मथन लीला, यमलार्जुन उद्धार, शकटासुर वध, उद्धव-गोपिकाओं के संवाद प्रसंग, कृष्ण का पत्र भेजना, उद्धव द्वारा गोपियों को पत्र सुनाना, कृष्ण का मिलन और मंगल आरती इत्यादि प्रसंगों को भी पद्य रूप में प्रस्तुत किया गया है।"7

सूत्रधार (गुटका गायक)–सूत्रधार अर्थात् गम्मत के कथा-सूत्रों का संयोजन करने वाला गम्मत पदों का गायक अथवा गुटका गायक। संपूर्ण गम्मत के दौरान सूत्रधार कथा-प्रसंगों को उद्धृत कर कभी गद्यात्मक शैली और कभी पद्य शैली में गायन कर गम्मत में कृष्ण लीलाओं का गीतात्मक व्याख्यान करता है। सूत्रधार ही व्यास पीठ पर बैठकर श्रीकृष्ण लीलाओं के पदों का गायन कर कथा को आगे गति प्रदान करता है। इतना सब कुछ होते हुए भी सूत्रधार यद्यपि 'रतनपुरिहा गम्मत' की मुख्य अभिनय धारा का पात्र या अंग नहीं है तथापि गम्मत में उसकी विशिष्ट और महती भूमिका है। मुख्य सूत्रधार के साथ कुछ सहायक गायक भी पदों के गायन में उसका साथ देते हैं।

पात्र–रतनपुरिहा गम्मत वस्तुतः श्रीकृष्ण जी की लीलाओं की झाँकी प्रस्तुत करता है। अतः इन लीलाओं में श्रीकृष्ण के साथ, जो सहभागी थे वे सभी 'रतनपुरिहा गम्मत' लोकनाट्य के पात्र हैं, किंतु मुख्य रूप से रतनपुरिहा गम्मत के प्रमुख नायक श्रीकृष्ण ही है। अन्य पात्र कुछ ही समय के लिए मंच पर दिखते हैं। भूमिका समाप्त होने पर ये पात्र नेपथ्य में चले जाते हैं और ये ही पात्र वेश बदल-बदल कर विभिन्न चरित्रों की भूमिकाओं का निर्वहन करते दिखायी देते हैं। रतनपुरिहा गम्मत के पात्र इस प्रकार है–श्रीकृष्ण, राधा, देवकी, वससुदेव, कंस, राजा उग्रसेन, बलराम, यशोदा, नंद, पवनरेखा, अक्रूर, उद्धव, द्रुमलिक राक्षस, पूतना, कागासुर, श्रीधर, तृणावर्त, बकासुर, गोप-गोपिकाएँ। इनके अतिरिक्त कुछ स्थानापन्न पात्र या कलाकार भी होते हैं, जो एक पात्र की भूमिका कर पुनः दूसरे पात्र की भूमिका में मंच पर आते-जाते रहते हैं।

सांगीतिक पक्ष (गीत-नृत्य-वाद्य)–रतनपुरिहा गम्मत का संपूर्ण वैशिष्ट्य ही उसकी सांगीतिकता में है, जो शास्त्रीय संगीत की पृष्ठभूमि से प्रभावित दिखायी देती है। संगीत तीन विधाओं की समन्विति का नाम है–अर्थात् गायन, वादन और नर्तन की विशेष और अपनी निजी पद्धति 'रतनपुरिहा गम्मत' को वैशिष्ट्यता प्रदान करती है और इसे विशिष्ट लोकनाट्य श्रेणी में ला खड़ा करती है। बाबू रेवाराम जी के हस्तलिखित 'गुटका' संग्रह के ऊपर भी इन पदों के लिए 'रतनपुरी चाल' इस प्रकार विशेष उल्लेख है। 'चाल' से यहाँ तात्पर्य पदों की धुन एवं गायन पद्धति से है। 'रतनपुरिहा गम्मत' गम्मत विधा का ऐसा विशिष्ट स्वरूप है, जिसमें गीत-संगीत, वादन, नर्तन का यथेष्ट एवं खुलकर प्रयोग होता है। इस विशिष्ट परंपरा में गायन-वादन-नर्तन का सामान्य गम्मत से हटकर शास्त्रीय संगीत से निकटता का संबंध दिखायी देता है। रतनपुरिहा गम्मत गायकों की गायन शैली में शास्त्रीय संगीत का पुट झलकता है। इसके कई पदों में तो कई शास्त्रीय रागों के स्पष्ट और प्रत्यक्ष दर्शन भी होते हैं। जैसे–'वस्त्र हरण लीला' के पद क्रमांक-125 को स्पष्टतः राग कालिंगडा में गाने का उल्लेख किया गया है। उसी प्रकार अन्य पदों को भी राग मालकौंस, राग भीमपलासी, राग धनाश्री, राग भैरवी में ही गाने के निर्देश हैं।"9

रतनपुरिहा गम्मत में नृत्यों का प्रयोग भी कम विस्मयकारी नहीं है। इन नृत्यों की भी अपनी निजता और विशिष्टता है। इसके नृत्य भी गीतों के समान ही शास्त्रीयता की झलक देते हैं। ये कोई सामान्य गम्मत के साधारण नृत्य नहीं, जिन्हें सहजता से अनुसरित किया जाए। बिना अभ्यास के इस परंपरा के नृत्य प्रस्तुत करना कठिन कार्य है। यद्यपि शास्त्रीय शैली के कत्थक, भरतनाट्यम आदि शैली की प्रखर प्रस्तुति

तो नहीं तथापि इन शास्त्रीय नृत्य शैलियों से प्रभावित कुछ नृत्य मुद्राओं, अंग-संचालन, पद-संचालन और पदाघातों का दर्शन 'रतनपुरिहा गम्मत' के नृत्यों में अवश्य दिखायी देता है।

रतनपुरिहा गम्मत में गीत और नृत्य जब इतने उन्नत श्रेणी के हैं तब भला वादन पक्ष कैसे पीछे रह सकता है। इसमें वादन शैली भी निर्विवाद रूप से उत्कृष्ट और विशिष्ट है। इस विशिष्ट गम्मत में प्रारंभ में गायन और नृत्य के साथ सारंगी और इसराज की संगत होती थी। ज्ञातव्य है कि सारंगी और इसराज विशुद्ध शास्त्रीय सांगीतिक पृष्ठभूमि से प्रेरित वाद्य है। कालांतर में इन वाद्यों का स्थान हारमोनियम ने ले लिया।

रतनपुरिहा गम्मत में तबला वाद्य एवं वादक महत्वपूर्ण है। यद्यपि इस परंपरा में घरानेदार शास्त्रीय वादन के अनुरूप तबला वादन नहीं होता, तथापि किसी मायने में उससे कम भी नहीं। अन्य लोकनाट्यों या सामान्य गम्मत में तबला प्रयोग की तुलना में इस परंपरा में तबला वादन या संगत समृद्ध तथा विशिष्टता लिए हुए है। लहरा के साथ संगत करते समय 'त्रिताल' के कायदे पल्टे और परनों का प्रयोग अधिकांशतः तबला वादक करते हैं और अपनी कुशलता और दक्षता का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। इस परंपरा में तबला वादक का पारंगत होना आवश्यक है। पदों के साथ संगत करते हुए शब्दाघात, छंद तथा पद के वजन के अनुरूप विशिष्ट लय में इस परंपरा में तबला वादन की आवश्यकता होती है। रतनपुरिहा गम्मत में तबला वादन की विशिष्ट परंपरा का विकसित रूप दिखायी देता है।

'रतनपुरिहा गम्मत' गायन-वादन-नर्तन के दृष्टिकोण एवं प्रस्तुतीकरण के आयाम से निश्चित ही लोकधारा की आबो-हवा में पल्लवित-विकसित शास्त्रीय पृष्ठभूमि की विशिष्ट गम्मत परंपरा है। यह विशिष्ट परंपरा संपूर्ण छत्तीसगढ़ में केवल रतनपुर में ही दिखायी देती है। अतः इसका विशिष्ट होना इस परंपरा का स्वाभाविक अधिकार है। 'रतनपुरिहा गम्मत' में बाबू रेवाराम जी और अन्य भक्त कवियों के पदों का प्रवाह एक-सा है, लेकिन छत्तीसगढ़ी शब्दों के यथा अवसर प्रयोग के कारण यह प्रयोग विशिष्ट प्रभाव पैदा करता है। रतनपुरिहा गम्मत के पदों के प्रचार-प्रसार के कारण गम्मत की गमक कम और रतनपुरिहा कृष्ण भक्ति-रस अधिक विस्तृत हुआ। गम्मत की इस परिनिष्ठित विशिष्ट परंपरा में गम्मत पर 'रहस' का आरोपण, अश्लीलता के स्थान पर श्लीलता का प्रस्थापन ही प्रमुख ध्येय रहा। रीतिकालीन भक्त कवियों के पदों में अध्यात्म और शृंगार का समाहार है। यही समन्वयन बाबू रेवाराम जी के 'गुटका' में दृष्टव्य है। गम्मत की यह विशिष्ट परंपरा शृंगार को अध्यात्म की ओर प्रस्थित करने तथा लोक को मर्यादित करने का महान संयोजन है।

'रतनपुरिहा गम्मत' लोकधर्मी और लोकप्रवृत्ति धारण करने के बाद भी शास्त्रीय संगीत के प्रभाव के कारण स्वतः ही विशिष्ट श्रेणी में प्रोन्नत हो जाता है। 'रतनपुरिहा गम्मत' जिसे रतनपुर में 'भादो-गम्मत' के नाम से भी संबोधित किया जाता है, कोई विडियो कैसेट या सी. डी. नहीं, जिसे जब चाहे देखा जा सके। ना ही कोई फरमाइशी कार्यक्रम है, जिसे जब मन पड़े तब सुना जा सके। यह किसी मदारी का बंदर नाच नहीं जिसे जब जी चाहे, जिस स्थान में हो आयोजित किया जा सके। 'रतनपुरिहा गम्मत' छत्तीसगढ़ अँचल की

अपनी विशिष्ट और गौरवशाली लोकनाट्य परंपरा है, जिसे विशेष अवसर पर, विशेष कलाकारों द्वारा विशेष सहृदयों के लिए आयोजित करने की परंपरा थी।

संदर्भ

1.लेखक-डॉ. बलदेव : स्मारिका पत्रिका, प्रकाशक-भारतेन्दु साहित्य समिति, बिलासपुर (म. प्र.), सन् 2009, पृ. सं. 26,

2.लेखक-श्री ब्रजेश श्रीवास्तव : रतनपुर दर्शन, पृ. सं. 1, प्रकाशक-श्री होरीलाल गुप्ता, पुरातत्व परिषद्, रतनपुर (म. प्र.), सन् 1999

3.लेखक-डॉ. नंदकिशोर तिवारी : रहस, पृ. सं. 13

4.लेखक-निरंजन महावर, चौमासा, संपादक-कपिल तिवारी, (मार्च-जुलाई), सन् 1985, पृ. सं. 24,

5.लेखक-पं. श्यामलाल चतुर्वेदी : लोक मड़ई, (वार्षिक लोक सांस्कृतिक पत्रिका), सन् 2002, पृ. सं. 23,

6. लेखक-डॉ. विनय कुमार पाठक बिहनिया (पत्रिका), अंक-3, मार्च, सन्-2003, पृ. सं. 6,

7.पं. बलदेव प्रसाद शर्मा (रतनपुरिहा गम्मत, गुटका गायक-सूत्रधार), रतनपुर के साक्षात्कार से साभार, दिनांक 18.09.2010

8.बाबू रेवाराम के हस्तलिखित अप्रकाशित गुटके से साभार, पृ. सं. 2

9.बाबू रेवाराम के हस्तलिखित अप्रकाशित गुटके से साभार, पद क्र.-125, पृ. सं. 57,

मिलिन्द अमृतफले, संगीत, शास.

डॉ. वामन वासुदेव पाटणकर कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय,

दुर्ग (छ.ग.)